2023

HINDI

Paper : HIN–HC–2016

(आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता)

(Honours Core)

Full Marks : 80

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×10=10

(क) कबीर की काव्य-भाषा का नाम क्या है?

(ख) कबीर के राम का स्वरूप कैसा है?

(ग) विद्यापति के गुरु कौन थे?

(घ) 'पद्मावत' की रचना किस ईस्वी को हुई थी?

(ङ) सूरदास-रचित मूल ग्रंथों की संख्या कितनी मानी जाती है?

(च) 'बाल-लीला' का अर्थ क्या है?

(छ) 'रामचरितमानस' का प्रधान रस क्या है?

(ज) तुलसीदास किस मार्ग के भक्त थे?

(झ) परंपरा के अनुसार 'बिहारी सतसई' का समाप्ति-काल कौन-सा ईस्वी सन् माना जाता है?

(ञ) 'सुजान' कौन है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 2×5=10

(क) विद्यापति ने किन भाषाओं में काव्य-रचना की है?

(ख) कबीर की रचनाओं के कितने रूप हैं? वे क्या-क्या हैं?

(ग) सूरदास की भक्ति-संबंधी दो विशेषताएँ लिखिए।

(घ) "देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा।" इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

(ङ) जायसी के काव्य की कोई दो कलापक्षीय विशेषताएँ लिखिए।

3. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 5×4=20

(क) विद्यापति ने राधा की वंदना कैसे की है?

(ख) 'मानसरोदक' खंड के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए।

(ग) तुलसीदास की काव्य-भाषा पर प्रकाश डालिए।

(घ) 'सूरदास के विनय के पद' विषय पर एक टिप्पणी लिखिए।

(ङ) 'बिहारी सतसई' की लोकप्रियता के कारण बताइए।

(च) घनानंद का कवि-परिचय प्रस्तुत कीजिए।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के सम्यक् उत्तर दीजिए : 10×4=40

(क) विद्यापति की शृंगार-भावना पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

अथवा

कबीर की साखियाँ वर्तमान समाज के लिए कितनी प्रासंगिक एवं सार्थक हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ख) भावपक्षीय सौन्दर्य की दृष्टि से सूरदास के पदों का विवेचन कीजिए।

अथवा

"'पुष्पवाटिका-प्रसंग' में मानवीय प्रेम-भावना की सहज अभिव्यक्ति हुई है।" प्रस्तुत कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

(ग) बिहारी के दोहों के कलापक्षीय सौन्दर्य पर विचार कीजिए।

अथवा

पठित पदों के आधार पर घनानंद की प्रेमानुभूति पर प्रकाश डालिए।

(घ) निम्नलिखित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँईं परत, स्यामु हरित दुति होइ।।

अथवा

हर जनि बिसरव मो ममिता, हम नर अधम परम पतिता।
तुअ सन अधम-उधार न दोसर हम सन जग नहिं पतिता।
जम के द्वारा जबाब कौन देव जखन बुझत,
निज गुन कर बतिया।
जब जम किंकर कोपि पठाएत तखन के होत धरहरिया।

★★★